INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 16 | ISSUE - 2 | MARCH – 2026

कन्नड नाट्य क्षेत्र को श्रीरंग का योगदान

डॉ. सुजाता पी. फातरपेकर
असोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग अध्यक्ष ,
एम.एम. कला और विज्ञान महाविद्यालय, सिरसी, कर्नाटक.

प्रो. आर. व्ही. जागीरदार उर्फ 'श्रीरंग' सामाजिक जीवन और समस्याओं के प्रति पैनी दृष्टि रखनेवाले नाटककार है समाज, भगवान, धर्म आदि के प्रति कटु विडम्बना ही इनके नाटकों में अधिक है सवादों में आस्कर वाइल्ड का वाक् चातुर्य तथा विडम्बना में बर्नाड शॉ का अनुकरण दृष्टिगोचर होता है। मध्यवर्गीय परिवार की विविध समस्याओं का प्रस्तुतीकरण इनके नाटकों में हुआ है उन्होंने सपूर्ण रूप से वर्तमान समाज के यथार्थ जीवन की विविध ज्वलंत समस्याओं को बौद्धिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने का प्रयास श्रीरंग ने किया है।

श्रीरंग समाज के अन्याय को देखकर व्यंग्य भी करते है साथ ही समाज की विकृत्तियों को देखकर उग्र हो जाते हे। अतः उनके नाटकों में समाज के अन्याय के प्रति विद्रोह के भाव मिलते है सभी विक्रतियों को समूल नाश करने, जलाने का संकेत देते है अतः उनके नाटकों की भाषा पौरुषपूर्ण है जिसमें आज बल और स्फूर्ति विद्यमान है। लोगों को जाग्रत करने के लिए व्यस्त व्यंग्यपूर्ण तथा चमत्कारपूर्ण संवाद भी मिलते है एस ओखर जी के शब्दो में-

बीसवीं शती में विलायत में जो कार्य शाँ कर सके वहीं काम श्रीरंग ने कर्नाटक में किया। अपनी प्रतिभा, पाश्चात्य नाट्य साहित्य का अध्ययन एवं रंगमंच के अनुभव के आधार पर नाट्य साहित्य को परिपुष्ट कर नाट्य क्षेत्र में अपना ही कन्नड नाट्य साहित्य स्थापित किया विलायत से लौटने के बाद अपना समाज, धर्म, जनता की रूढ़िवादिता एवं अज्ञान की जानकारी हुई। श्रीरंग ने भारतीय समाज की समस्याओं का मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रतिपादन अपने नाटकों में प्रस्तुत कर, नाटक को साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा बतायी उन्होनें समाज की कमजोरियों, रूढियों तथा जीर्णशीर्ण परंपराओं का चित्रण अपने सामाजिक नाटकों में किया उनके कई एकांकियो तथा नाटकों में सामाजिक व्यंग्य उभरकर आया है। आग्निसाक्षी में विवाह, दहेज प्रथा आदि का चित्रण बहुत ही मार्मिक है। समाज की कड़वाहट रूढ़ियों की कमजोरियों का चित्रण ऐसी व्यंग्यात्मक शैली में किया है कि, नाटक के पूर्ण होते ही समाज या दर्शक का मन उसके प्रति विद्रोह से भर जाता है दर्शकों को सोचने के लिए मजबूर कर देता है। उनके अनेक नाटकों में व्यक्ति तथा युवापीढ़ी की समस्याएं, व्यक्ति का दीनहीन जीवन, आज की दूषित प्रणाली का चित्रण

मिलता हे जो आज भी वह प्रचलित समस्याएँ है। इतना ही नहीं नाट्य-शिल्प के नये नये प्रयोग भी श्रीरंग के नाट्य क्षेत्र में देख सकते है। वे अपने अंतिम समय तक रंगमंच से जुड़े रहे नये-नये शिल्प विधान का अविष्कार करते रहे।

श्रीरंग का दृष्टिकोण आलोचक का है। अतः उनके नाटकों में समाज के प्रति एक तीक्ष्ण व्यंग्य और उसके अंतर्गत नेराश्यमयी वेदना भी छिपी रहती है। 'मुक्कण्ण विराट पुरुष' में क्रातिकारी तीक्ष्ण भाषा का प्रयोग है उसमें शाँ के Superman Theory (अतिमानवत्व) का उदाहरण देकर यह बताया है। कि मनुष्य भी मुक्कण्ण (Superman) बन सकता है। " श्रीरंग के नाटक हृदय की अपेक्षा दिमाग को ही स्पर्श करते हैं। " श्रीरंग ने अपने नाटकों में रंगमंच की त्रुटियों को दूरकर उसे शिष्ट रूप प्रदान करने का प्रयत्न किया, साथ ही गीतो को रंगमंच से दूर रखने का प्रयास भी किया।

श्रीरंग मंचन योग्य नाटकों के सृजन की ओर अधिक सतर्क रहे यह भी उल्लेख करना उचित होगा कि कन्नड भाषा के प्रसार प्रचार के लिए स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालयों ने एव अन्य शिक्षण सस्थाओं ने भी सहयोग दिया। धारवाड में श्रीरंग ने कन्नड नाट्य विलासी संघ की स्थापना सन् 1940 के आस पास की। यह संघ कर्नाटक के प्रमुख नगरों के अलावा पूना, मुंबई, हैदराबाद, नगरों की यात्रा करं नाटक खेलता था श्रीरंग जी के कई नाटकों के प्रयोग उपर्युक्त संघ के द्वारा ही हुए हैं। श्रीरंग जी का नाटक 'शोकचक्र' इस संघ द्वारा अभिनीत श्रेष्ठ नाटक था । 'हरिजन्वार' नाटक को देखकर लोग विरोध व्यक्त करने लगे।

श्रीरंग के कारण नाटक को साहित्य क्षेत्र में एक गौरवपूर्ण स्थान मिला। दर्शकों में सुरुचि उत्पन्न की अपने शिक्षाप्रद, सुरुचिपूर्ण एवं उच्चकोटि के नाटकों द्वारा लोगो में जागृति पैदा की 'हीरजन्वार' से लेकर 'शोकचक्र' तक उनके सभी नाटक सामाजिक अवनति पर आधारित है 'कत्तले बेलकु' से 'केलुजनमेजय' तक के सभी नाटकों में सामाजिक क्रांति स्पष्ट होती है। श्रीरंग ने राष्ट्रीय जागृति के साथ पतनोन्मुख समाज की ओर ध्यान दिया व्यक्ति के सभी पहलू इनके अंतर्गत समाविष्ट किये गये समाज की जीर्णशीर्ण रूढ़ियों, मान्यताओं एवं कुरीतियो की आलोचना की। मनुष्य के हर्ष-विषाद, उत्थान-पतन, अनुराग-विराग का चित्रण उन्होंने किया।

उनके कई नाटक सामाजिक संघर्ष एव राजनीतिक आंदोलन को मुखरित करते है। (समग्र मंथन, उत्तम प्रभुत्व लोल लोहे) आर्थिक विषमताओं एवं शोषण का चित्रण ओर गांधीवादी विचार धारा का प्रतिपादन भी उन्होंने किया। सामाजिक कुरीतियों की आलोचना करने में श्रीरंग सिद्धहस्त रहे है । दहेज प्रथा, कन्नड के नाटककार श्री रंग और हिन्दी के डॉ. लाल के नाटकों... वैवाहिक समस्या, दांपत्य जीवन की समस्या, सयुक्त परिवार की समस्या, र समस्या, नारी जीवन आदि प्रवृत्तियो का स्पष्ट चित्रण श्रीरंग के नाटकों में प्राप्त होता है।

कन्नड नाट्य भूमि को एक नया आयाम देकर विभिन्न शिल्प के माध्यम से उसका प्रयोग करते थे। इससे आधुनिक कन्नड रंगमंच को प्रमख स्थान भी मिला। अतः उन्हें एक श्रेष्ठ नाटककार कहा जाता है।

श्रीरंग 'व्यक्ति स्वातंत्र्य को प्रमुख स्थान देते है, मानव कृत संप्रदाय का विरोध करते रहे। लोक कल्याण के लिए व्यंग्य, हास्य, आलोचना के द्वारा मनुष्य में छिपे द्विधावृत्ति आत्वंचना, अज्ञान के विरुद्ध वे लिखने लगे। मानव और समाज (Man in society) ही श्रीरंग जी का महत्त्वपूर्ण विषय बन गया।

साहित्य क्षेत्र के लिए श्रीरंग जी का योगदान

नाटक

1. स्वार्थत्याग (1920)

2. धर्मविजय (1921)
3. ई संसार (1923)
4. कन्नड स्थाम (1923)
5. अधिक मास (1929)
6. उदर वैराग (1930)
7. वैद्यराज (1932)
8. हरिजन्वार (1934)
9. प्रपंच पाणिपत्तु (1934)
10. परमेश्वर पुलकेशी (1936)
11. नरकदल्ली नरसिंह (1937)
12. हेण्णो गण्डो (अप्रकाशित)
13. सौभाग्यवतीभव (अप्रकाशित)
14. सध्याकाल (1939)
15. मुक्कण्ण विराट पुरुष (1944)
16. संसारिग कंस (1945)
17. जरासंधि (1948)

श्रीरंग जी के व्यक्तित्व और कृतित्व की पहचान

18. कर्तारन कम्मट (1955)
19. शोकचक्र (1957)
20. जीवन जोकाली (1957)
21. कत्तले बेळ (1958)
22. केळू जनमेजय (1960)
23. हट्टिप्दु होलेयूरु (1961)
24. सिरि पुरंदर (1961)
25. संजीवनी (1961)
26. Hifafa (1961)
27. रंगभारत (1965)
28. तेलिसो रंग इल्ल मुलुगिसो (1965)
29. दारियावुदथ्या वैंकुटक्के (1965)
30. नी कोड ना बिडे (1961)
31. शतायु गतायु (1970)

32. स्वर्गक्के मूरे बागिलु (1970)
33. अपराधंगल क्षमिसु (1970)
34. एनु बेडली निन्न बलिगेवंदु (1975)
35. यारिगे माडती म्याँव (1975)
36. समग्र मंथन (1979)
37. इदु भाग्य इदु भाग्य इदु भाग्यवय्या (1977)
38. ईसबेकु इद्दु जैसबेकु (1977)
39. उत्तम प्रबुत्व लोळलो हे (1977)
40. गुम्मनेल्लिह तोरम्मा (1979)
41. नी मायेयो निन्नोलु मायेयो (1979) 42. भारत भाग्यविधात (1981)
43. कालाय तस्मै नमः (1982)
44. नीवे हेलिरि (1982) 45. अग्नि साक्षी (1985)

सहायक शोध ग्रंथ.

१) श्रीरंग जीवन तरंग = प्रो. जी.एस.अमुर १९६४ सरस्वती विषय, धरवाड
२) कन्नड संगभूमि पुरोभिवृद्धि आद्य रंगाचार्य १९७८. कर्नाटक विश्व, विद्यालय धारवाड
३) रंगप्रपच -के.बि.अक्षर-१९९४ अक्षर प्रकाशक प्रियदर्शिनि प्रकाशन बेंगलूर
४) सालु दीपगलु-आद्य रंगाचार्य-कर्नाटक साहित्य अकदमी बेंगलूरु